IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, June 2025
Impact Factor: 7.67

राजस्थान की सुंदर सुई कढ़ाई कला – परंपरा, पहचान और शिल्पकौशल का संगम

निशु त्यागी, विधार्थी, ललित कला विभाग
रीना त्यागी, सहायक प्राध्यापक, ललित कला विभाग
मयंक सैनी, सहायक प्राध्यापक, ललित कला विभाग
श्री राम कॉलेज, मुजफ्फरनगर

सारांश

भारतीय हस्तशिल्प परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट कारीगरी होती है और भारतवर्ष में विभिन्न शासकों के प्रभावों से विकसित शिल्प कलाओं की झलक देखने को मिलती है। इन्हीं में से एक प्रमुख कला है कढ़ाई जो राजस्थान में एक परंपरा के रूप में सदियों से जीवित है और जिसे वहाँ के कारीगरों ने पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रखा है। राजस्थान के कारीगर कढ़ाई को केवल एक व्यवसाय के रूप में नहीं बल्कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सम्मान के प्रतीक के रूप में देखते हैं। राजस्थान में कढ़ाई कार्य के प्रमुख केंद्र स्थित हैं और यह हस्तकला राज्य के अनेक समुदायों के लिए आजीविका का एक मुख्य साधन है। पारंपरिक परिधान सजाने के तरीकों में कढ़ाई का विशेष स्थान रहा है और यह आज भी युवाओं के बीच उतनी ही लोकप्रिय है। चाहे वह प्राचीन पारंपरिक डिज़ाइन हो या आधुनिक आकृति व मोटिफ़ कढ़ाई वस्त्रों की सजावट का एक प्रमुख और प्रिय माध्यम बनी हुई है। यह कला न केवल सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है, बल्कि क्षेत्रीय विविधताओं और रचनात्मकता का भी प्रतीक है।

मुख्य शब्द: कढ़ाई राजस्थान मोटिफ़ डिज़ाइन परिधान